चुटकुलों का पिटारा



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

चुटकुलों का पिटारा

प्रतिभा दासगुप्ता

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मई 1997
ज्येष्ठ 1919

PD 10T OP

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

रु. 17.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा जैन कंप्यूटर, डी-29 विकास मार्ग, लक्ष्मीनगर, दिल्ली 110 092 द्वारा लेजर टाइप सैट होकर जे. के. ऑफसेट प्रिंटर्स, 315, जामा मस्जिद, दिल्ली 110 006 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

प्राथमिक स्तर पर पढ़ने-लिखने की क्रिया को सरल और रुचिकर बनाने के लिए छः पुस्तकों की यह एक शृंखला है। इस शृंखला की यह प्रथम पुस्तक है। यह पुस्तक बच्चों के प्रचलित तथा मनपसंद खेलों पर आधारित है।

इस शृंखला की सामग्री बच्चों के अनुभव और उनके स्थानीय परिवेश पर आधारित है। मुख्य रूप से यह सामग्री हिन्दी भाषी क्षेत्र के लिए है। अन्य क्षेत्रों के लिए भी ऐसी पुस्तक तैयार की जा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-सामग्री निर्माण में स्थानीय परिवेश की विशिष्टताओं पर विशेष बल दिया गया है। यह आशा की जाती है कि स्थानीय विशेषताओं पर आधारित यह शैक्षिक सामग्री अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के क्रियाकलापों में बच्चों की सहभागिता बढ़ाएगी। साथ ही केन्द्र में उन्मुक्त एवं आकर्षक वातावरण बनाने में सहायक होगी। भाषा, गणित एवं परिवेश अध्ययन संबंधी बातों को भी बच्चे आसानी से सीख सकेंगे।

यह सामग्री प्रोफेसर सी.जे.दासवाणी, अध्यक्ष, अनौपचारिक शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/जन जाति शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में तैयार की गई है। इसके लिए मैं उनके प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूं।

इस शृंखला को तैयार करने में अनेक विशेषज्ञों का सहयोग रहा है। उनमें श्री टी.के.श्रीवास्तव, अध्यक्ष, जनकल्याण आश्रम, डॉ. उमा गुप्ता, जिला अनौपचारिक शिक्षा अधिकारी यू. पी., डॉ. ओम प्रकाश सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, डॉ. बी. एन. सिंह, साक्षरता निकेतन, लखनऊ, श्री जगमोहन सिंह, राज्य शिक्षा संस्थान, यू. पी. एवं श्री पूरन मल मुख्य सम्पादक, प्रकाशन विभाग, एनसीईआरटी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मैं इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

डॉ. (कुमारी) प्रतिभा दासगुप्ता, प्रवाचक ने इस शृंखला को वर्तमान रूप देने में विशेष परिश्रम किया है। इस कार्य के लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

मुझे विश्वास है कि यह सामग्री अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने-लिखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाएगी, साथ ही न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त करने में भी अहम् भूमिका निभाएगी। परिषद् का यह काम तभी सार्थक होगा जब सरकारी एवं स्वैच्छिक संस्थाएं इससे लाभ उठाएं। आशा है कि इन संस्थाओं से बहुमूल्य सुझाव हमें मिलेंगे जो इस सामग्री के परिमार्जन में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

पुस्तक शृंखला के बारे में

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में आने वाले अधिकतर बच्चे सामाजिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के होते हैं इनमें से अनेक बच्चे विद्यालय छोड़े हुए होते हैं कुछ ऐसे भी होते हैं जो विद्यालय कभी गए ही नहीं। ये कामकाजी बच्चे होते हैं। दिन भर काम करने के बाद ये थके हारे केन्द्रों में पढ़ने आते हैं। इसलिए केन्द्रों का वातावरण उन्मुक्त एवं आकर्षक होना बहुत जरूरी है। इससे उनका धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने में मन लगेगा। केन्द्रों के कार्यों के प्रति लगाव भी बढ़ेगा। ऐसा वातावरण बनाने के लिए शैक्षिक सामग्री रोचक एवं उच्चकोटि की होनी चाहिए।

देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत तरह-तरह की सामग्री बनाई गई है फिर भी ऐसी सामग्री के अभाव का अनुभव हो रहा है जो बच्चों की मन पसंद बातों एवं क्षेत्रीय संदर्भों पर आधारित हो। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए छः पुस्तकों की इस शृंखला को तैयार किया गया है। इसे बनाते समय खेल-कहानियों आदि के शैक्षिक पक्ष पर विशेष बल दिया गया है। पुस्तकों को बनाते समय इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि इनका सीधा संबंध बच्चों के नित्यप्रति के जीवन और परिवेश से हो।

उपरोक्त मानकों को आधार बनाकर यह पुस्तक शृंखला तैयार की गई है। इसके निर्माण में जिन बातों पर विशेष बल दिया गया है वे हैं बच्चों के जीवन से जुड़े होना, पाठ्यक्रम का विभिन्न विषयों के साथ सीधा सम्पर्क आदि।

इस शृंखला की पुस्तकों को कुछ विशेष चरणों में विकसित किया गया है। सर्वप्रथम स्थानीय सामग्री चयन के लिए आवश्यक उपकरण बनाए गए हैं। इन उपकरणों में सुधार क्षेत्रीय स्तर की बैठकों में चर्चा के द्वारा किया गया। दूसरे चरण में विभिन्न क्षेत्रों में जाकर स्थानीय सामग्री एकत्रित की गई। एक गोष्ठी में निर्धारित मानकों के आधार पर इनकी जांच करके चयन किया गया। आवश्यकता के अनुसार पुनः क्षेत्रों में जाकर इसकी जांच-पड़ताल की गई। इस कार्य में क्षेत्र विशेष के अनुभवी शिक्षाविद् एवं अन्य जानकार व्यक्तियों का पूरा सहयोग मिला। क्षेत्रीय जानकारी के आधार पर सामग्री की दुबारा समीक्षा की गई तथा सुधार किया गया। इस पूरी प्रक्रिया में न्यूनतम अधिगम स्तर तथा अन्य निर्धारित मानकों का विशेष ध्यान रखा गया।

इन पुस्तकों को सहायक सामग्री के रूप में तैयार किया गया है। इस तरह ये पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों को पढ़ाने में सहायक होंगी। अनुदेशक को देखना होगा कि इन पुस्तकों की विषयवस्तु पाठ्यपुस्तक से कहाँ-कहाँ जुड़ रही है। पाठ्यपुस्तक के जिन पाठों के साथ इसकी विषयवस्तु जुड़े उन्हें जोड़ कर पढ़ाएं।

इस श्रृंखला की प्रत्येक पुस्तक में अनुदेशकों के लिए कुछ सुझाव दिए गये हैं इनसे उन्हें जानकारी मिलेगी कि स्थानीय विशेषताओं पर आधारित सामग्री शैक्षिक उपलब्धि के लिए कैसे काम में लाई जाती है। मुझे विश्वास है कि इससे अनुदेशकों को शैक्षिक अधिगम प्रक्रिया आयोजित करने में काफी मदद मिलेगी। अतः अनुदेशकों से अपेक्षा की जाती है कि वे दिए गए सुझावों को ध्यान से पढ़ेंगे और परिस्थिति के अनुसार उनका अवलोकन करेंगे। पुस्तकों की इस श्रृंखला में ली गई सामग्री तभी सार्थक होगी जब पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों से इसे स्वाभाविक रूप से जोड़ा जाए।

इन पुस्तकों के निर्माण में अनेक लोगों का योगदान रहा है। इनके नाम अलग से दिए गये हैं इन्होंने सामग्री की जांच तथा चयन करने में विशेष मदद की। मैं इन सभी लोगों का आभारी हूँ।

विभाग की डॉ. (कुमारी) प्रतिभा दासगुप्ता, प्रवाचक ने सामग्री के चयन एवं विश्लेषण के लिए उपयुक्त उपकरण तैयार किए। उन्होंने संकलनकर्ताओं को प्रशिक्षण देने में अथक परिश्रम किया। इनका यह प्रयास सराहनीय है।

इस श्रृंखला की पाण्डुलिपि तैयार करने में श्री राजेन्द्र पाल, परियोजना अध्येता ने विशेष रूप से सहयोग दिया है। इस कार्य के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष, श्री यू. प्रभाकर राव और उनके सहयोगियों ने पुस्तक के प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं इन लोगों के प्रति आभारी हूँ।

सी. जे. दासवाणी
अध्यक्ष
अनौपचारिक शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/
जनजाति शिक्षा विभाग

शैक्षिक माध्यम के रूप में चुटकुलों का उपयोग

बच्चे एक दूसरे से हंसी-मजाक करके आनन्द लेते हैं यह इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। कई बच्चे तरह-तरह के चुटकुले एक दूसरे को सुनाते हैं। इस प्रकार वे अपना मन बहलाते रहते हैं। कामकाजी बच्चों की यह स्वाभाविक प्रकृति उनको कुछ देर के लिए अपना दुख-दर्द भूलने में काफी सहायक होती है।

ये बच्चे अपनी शैशवावस्था खो चुके होते हैं। जब इनके हंसने, खेलने-कूदने के दिन होते हैं तब ये बड़ों की तरह पैसा कमाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। यदि इनकी शैक्षिक सामग्री मन बहलाने वाली बातों से जुड़ी हो तो यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। चुटकुलों का संकलन इसी आशय से किया जाता है।

इस पुस्तिका में 50 चुटकुले दिये गये हैं। इनमें से कुछ चुटकुले बच्चों की कामकाजी घटनाओं से जुड़े हैं तो कुछ भाषा के द्विअर्थी शब्दों से संबंधित हैं जैसे : बदरी से बंदरी, शंकर से शकर, कारखाने से कार खाना, पत्र का जवाब देने और मुंह पर जवाब देना। कुछ चुटकुले पशु-पक्षी, कीट-पतंगों से सम्बन्धित हैं, तो कुछ फल-फूल से संबंधित हैं। कुछ ऐसे भी चुटकुले हैं जो मित्रों, माता-पिताओं, डॉक्टर-मरीज, चोर-दरोगा, आदि की बातों पर आधारित हैं।

इन चुटकुलों से अनुदेशक बड़ी आसानी से पढ़ने-लिखने का एक माहौल केन्द्र में बना सकते हैं। इससे केन्द्र के कार्य के प्रति बच्चों का लगाव बढ़ेगा। साथ ही बच्चों में भाषा एवं विज्ञान संबंधी दक्षताएं विकसित होंगी।

चुटकुले अनुदेशक और बच्चों के बीच में दूरी कम करने में भी सहायक होंगे। इससे अनुदेशक के लिए पाठ को प्रभावी रूप से पढ़ाना आसान हो सकेगा।

इन चुटकुलों से बच्चों में निम्नलिखित दक्षताएँ विकसित होंगी :

- सुनकर समझना;
- समझकर जवाब देना;

- हाजिर जवाब होना;
- सुनी हुई बातों से अनुमान लगाना;
- घटना और इसके कारणों के बीच संबंध ढूंढना;
- झिझक दूर होना;
- शब्द-भण्डार में वृद्धि होना;
- पर्यायवाची शब्दों में भेद करना;
- विपरीत परिस्थितियों में धैर्य से काम लेना;

बच्चे शहर में हों या गाँव में, वे आपस में चुटकुलों का आदान-प्रदान करते रहते हैं। अनुदेशक से यह उम्मीद की जाती है कि वे इस तरह के चुटकुले बच्चों से पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं से एकत्रित कराएं और संदर्भ के अनुसार इनका उपयोग करें। यह ख्याल रखना होगा कि चुटकुले में दी गई भाषा पाठ से संबंधित तथा बच्चों के स्तर की हो। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि चुटकुले की बातें किसी बच्चे के मन को ठेस पहुंचाने वाली न हों। इसलिए चुटकुलों का चयन करते समय इन सब बातों का ध्यान रखना होगा।

पाठ के शुरू में, बीच में या किसी भी उपयुक्त स्थान पर चुटकुले जोड़ने से पाठ के प्रति बच्चों का आकर्षण अवश्य बढ़ेगा।

आभार

पुस्तिका का प्रथम प्रारूप बनाने में श्री टी. के. श्रीवास्तव, डॉ. ओम प्रकाश सिंह, डॉ. उमा गुप्ता, डॉ. बी. एन. सिंह तथा श्री जगमोहन सिंह ने सहयोग दिया है। इसके लिए परिषद् उनकी आभारी है।

विषय-सूची

काम काजी घटनाएं



1. रमेश - पता नहीं जाड़ों में लोग महीनों कैसे नहीं नहाते।

उमेश - हां मुझे तो पच्चीस दिन बाद ही खुजली होने लगती है



2. **मालकिन** *(ग्वाले से)* - मैंने कितनी बार कहा कि दूध छह बजे तक दे जाया करो।

ग्वाला - मालकिन, नल में पानी छह बजे के बाद आता है।



3. **ग्राहक** *(अपना कुर्ता दिखाते हुए)* - लाला कल तुमने कैसा साबुन दिया था, धोने से सारे कपड़े ही सिकुड़ गए।

दुकानदार - बाबूजी, कल आप भी इस साबुन से नहा लेना, कपड़े अपने आप फिट आ जाएंगे।



4. **कमला** *(धोबी से)* - ऐसे कपड़े धोते हो कि एक के दो हो जाते हैं।

धोबी - मगर पैसे तो मैं एक के ही लेता हूँ।



5. **पिताजी** - राजू, तुम्हारा पेपर कैसा रहा?

राजू - पिताजी, एक प्रश्न गलत हो गया।

पिताजी - बाकी प्रश्नों के उत्तर तो ठीक हैं?

राजू - बाकी तो मैंने किए ही नहीं।



6. एक छोटी बच्ची ने टेलीफोन पर अपने पिताजी की आवाज सुनी। वह जोर-जोर से रोने लगी।

मां ने पूछा - अरे बेटी क्यों रो रही हो?

बेटी - अब इसमें से पिताजी कैसे निकलेंगे?



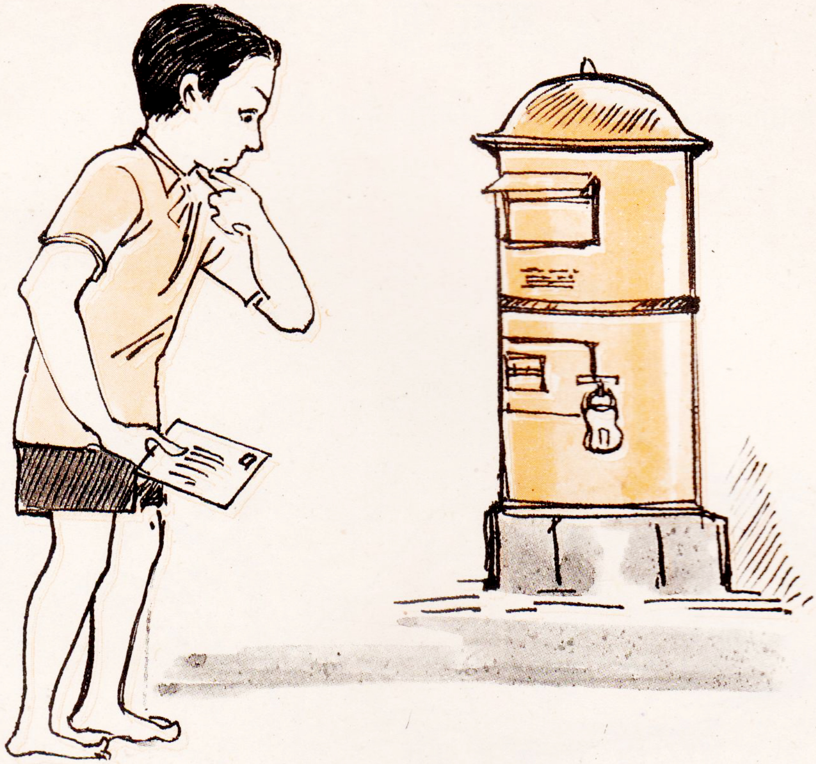
7. एक कंजूस कहीं जा रहा था। रास्ते में उसके पैर में कांटा चुभ गया। वह बोला - ईश्वर को धन्यवाद। भला हुआ मैं जूते पहनकर नहीं आया, नहीं तो उसमें भी छेद हो जाता।



8. दिनेश *(माली से)* - कल तुमने पौधों को पानी नहीं दिया।

माली - कल पानी बरस रहा था।

दिनेश - पानी बरसने से क्या हुआ। छाता लगा लेते।



9. **मालिक** - रामू, तुमने लेटरबॉक्स में पत्र डाल दिया था न?

रामू - मालिक, शहर के सभी लेटरबॉक्सों में ताले पड़े हैं। मैं पत्र के... डालता।

भाषा की हेर-फेर



1. **दरोगा** *(सिपाही से)* - क्यों डाकू को पकड़ लाए?

सिपाही - नहीं साहब, उसकी उंगलियों के निशान ले आया हूँ।

दरोगा - कहां है निशान?

सिपाही - हुजूर, मेरे गाल पर।

2. **एक मित्र** - अमेरिका जाने की सोच रहा हूँ। कितना पैसा लगेगा।

दूसरा मित्र - एक भी नहीं, सोचने का कोई पैसा नहीं लगता।



3. **मरीज** - डॉक्टर साहब! मेरे शरीर में आग निकल रही है।

डॉक्टर - अरे, आग ! तब तो फौरन आपको फायर ब्रिगेड वालों को बुलाना चाहिए।

4. **राम** - श्याम, तुम्हारे पिताजी कहाँ गए हैं?

श्याम - पिताजी कारखाने गए हैं।

राम *(आश्चर्य से)* - क्या तुम्हारे पिताजी कार खाने लगे हैं?

5. **पिता** *(पुत्र से)* - मैंने तुम्हें इतने पत्र लिखे, तुमने जबाव क्यों नहीं दिया?

पुत्र - जी, आपने ही तो कहा था कि बड़ों को जवाब नहीं देना चाहिए।

6. **दिनेश** *(मुकेश से)* - पुराना उधार चुकाया नहीं और नया ले लिया। अब उसे कैसे चुकाओगे?

मुकेश - चिंता न करो, मैं इसके भी पुराना होने का इंतजार करूंगा।

7. **पिता** - रानी है तो तीन साल की मगर बातों में बड़ों-बड़ों के कान काटती है!

मोहन - लेकिन पिताजी, वह कानों तक पहुंच कैसे पाती है?

8. **एक यात्री** *(पान वाले से)* - बांस गांव की बस कब मिलेगी?

पाना वाला - तेईस नंबर की बस बांस गांव जाती है। आप इंतजार कर लें। यात्री इंतजार करता रहा। कुछ देर बाद पान वाले ने पूछा आपकी बस अभी नहीं आई?

यात्री बोला - मैं बराबर गिनता रहा हूँ। बीस बसें जा चुकी हैं। दो बसें और जाएंगी। उसके बाद मेरी ही बस का नंबर है।

9. **मां** - क्यों बेटा, तुम्हारा पर्चा आसान था या मुश्किल?

बेटा - पढ़ने में आसान था लेकिन करने में मुश्किल।

10. **बदरी** - तुम्हारे नाम से बिंदी हटा दें तो तुम्हारा नाम कितना भद्दा लगेगा - शकर।

शंकर - और अगर वह बिंदी तुम्हारे नाम पर रख दी जाए - बंदरी।

11. **अध्यापक** - पर्स और थैले में क्या फर्क है?

छात्र - थैले में पर्स रख सकते हैं, लेकिन पर्स में थैला नहीं।

12. **पिता** - बेटा, छोटी-छोटी बातों से ही आदमी बड़ा बनता है।

बेटा - तभी तो मैं बड़ी बातों पर कभी ध्यान नहीं देता।

13. **विभा** - मैं एक घंटे से बोले जा रही हूँ पर तुम हो कि जवाब ही नहीं देती।

रमा - जवाब तो तब दूंगी, जब तुम सुनो।

14. **पुलिस वाला** - क्या तुमने ट्रक का नंबर लिख लिया था?

घायल आदमी - 'फिर मिलेंगे' लिखा था ट्रक पर। मैंने सोचा कि जब दुबारा मिलना ही है तो फिर लिख लूंगा।

15. **दुकानदार** - बहुत बढ़िया मिठाइयां है, खुद देख लीजिए।

ग्राहक - देखकर क्या पता चलेगा, खाकर बता सकता हूँ।

पशु-पक्षियों के साथ

1. **एक चिड़िया** - शर्त लगा लो, तुम इस पेड़ पर लगे फल को नहीं खा सकती।

   दूसरी चिड़िया - मैं खा तो लूंगी, पर फल तुम्हें तोड़कर लाना होगा।

2. **अध्यापक** - एक जंगल में एक शेर, चार खरगोश, दो सियार रहते हैं, जोड़ कर बताओ कुल कितने जानवर हुए ?

   छात्र - एक, क्योंकि शेर के रहते दूसरा जानवर बचेगा ही नहीं।

3. **अध्यापक** ने कक्षा में बच्चों से प्रश्न किया - हाथी और मच्छर में क्या अन्तर है?

   एक बालक - गुरुजी ! मच्छर हाथी को काट सकता है, मगर हाथी उसे नहीं काट सकता।





4. **रानी** - तुम अचानक शेर को देख लो तो क्या करोगी?

मीरा - यह कोशिश करूंगी कि शेर मुझे न देखे।

फल-फूल और बच्चे



1. **मुन्नू** - मैं कोई भी फल बिना छिले खा सकता हूँ।

   टुन्नू - यह लो, नारियल, इसे खाकर दिखाओ तो जानूं।

2. **मां**- बेटा, चाकू न जाने कहां खो गया है फल कैसे काटूं?

   बेटा - कोई बात नहीं। मेरे दांत बहुत मजबूत हैं, मैं बिना काटे ही फल खा लूंगा।

आपसी बातचीत में विनोद



1. **एक बच्चा** - पहाड़ों पर चढ़ने वाले कमर में रस्सी क्यों बांधे रहते हैं?

दूसरा बच्चा - जिससे कोई बीच में न भाग सके।



2. एक आदमी ने दीवार पर कोट टांगकर उसके नीचे लिखा कोई मेरा कोट न चुराए। मैं मुक्केबाजी का चैम्पियन हूँ। चोर ने कोट उठा लिया और लिख दिया - कोई मेरे पीछे न आए। मैं हमेशा दौड़ में प्रथम आता हूँ।

3. **सुरेश** *(दांतो के डॉक्टर से)* - डॉक्टर साहब, मेरे मित्र को दांतों से नाखून काटने की आदत है।

डॉक्टर - आप अपने मित्र को यहां ले आइए। मैं उसके दांत ही उखाड़ दूंगा।



4. **एक पड़ोसिन** - आपके घर में आने वाले मेहमान का स्वागत सबसे पहले कौन करता है?

दूसरी पड़ोसिन - मक्खी, मच्छर और कुत्ते।

5. **एक यात्री दूसरे यात्री से** - आप तो अकेले हैं, फिर डेढ़ टिकट क्यों खरीदा है?

दूसरा यात्री - पहले मैं टी.टी.को आधा टिकट ही दिखाऊंगा, मान गया तो ठीक है, नहीं तो पूरा टिकट दिखा दूंगा।

6. वकील ने चोर को मुकदमें में जिता दिया। **चोर खुश होकर बोला** - वकील साहब हम आपसे मिलने आएंगे।

वकील साहब तुरंत बोले - जरूर आना, पर रात के समय मत आना।

7. **एक मित्र** - तुम्हें समझाते-समझाते मेरा सिर दर्द करने लगा और तुम चुपचाप बैठे हो।

दूसरा मित्र - जब मेरे सिर में दर्द होने लगेगा, तो मैं चुपचाप यहां से चला जाऊंगा।

8. **आदमी** - ये समोसे तो स्वादिष्ट नहीं हैं। परसों वाले बहुत स्वादिष्ट थे।

हलवाई - साहब, ये परसों वाले ही हैं।

9. **आदमी** - इंस्पेक्टर साहब, एक आदमी मुझे जान से मार डालना चाहता है।

इंस्पेक्टर - फिक्र मत करो। उसे मारने दो, फिर में उसे देख लूंगा।

10. **ग्राहक** - क्या मैं इस गिलास की मजबूती परख सकता हूँ?

दुकानदार - जरूर पर पहले इसकी कीमत चुका दीजिए।



11. एक बच्चा बताशे खा रहा था। वह पानी पीने गया। घड़े में से पानी निकालते हुए उसने अपनी छाया देखी। उसी समय उसके हाथ से एक बताशा छूटा और घड़े में गिर पड़ा। बच्चा रोता हुआ दादा के पास गया और बोला "दादा, दादा, एक बच्चे ने मेरा बताशा छीन लिया।"

"कहां है वह बच्चा?" दादा ने गुस्से में कहा।

बच्चे ने कहा - वह रहा घड़े में।

दादा ने घड़े में देखा तो उन्हें अपनी छाया दिखाई दी। **वे बोले** - क्यों रे बूढ़े तुम्हें बच्चे से बताशा छीनते शर्म नहीं आई ।

12. **मां** - बेटा तुम छतरी ले गये थे, फिर भी भीग गए?

बेटा - हां मां, मुझे डर था कि कहीं छतरी न भीग जाए।

13. **एक मित्र** - भाई तुम्हारी दुकान पर तो रोज नए-नए ग्राहक दिखाई देते हैं।

दूसरा मित्र - पुराना ग्राहक तो भूलकर भी इधर कदम नहीं रखता।

14. **एक मित्र** - हम दोनों आपस में पेन की अदला-बदली कर सकते हैं।

दूसरा मित्र - आज नहीं कल। आज मैं बढ़िया वाला पेन लाया हूँ।

15. **राजेश** - सुनील, क्या तुमने कभी मुझे किसी से लड़ते देखा है?

सुनील - नहीं पर पिटते हुए तुम्हें कई बार देख चुका हूँ।

16. **दरोगा** - खबरदार, दौड़े तो गोली मार दूंगा।

चोर - ठीक है, दौड़ूंगा नहीं। धीरे-धीरे यहां से खिसक जाता हूँ।

17. **एक कवि** - लगता है तुम्हें मेरी कविताएं अच्छी नहीं लगीं तभी तो तुम ताली बजा रहे थे।

दूसरा कवि - जी हां, और इसलिए भी कि जब मैं कविताएं सुनाऊं तो आप भी ताली बजाएं।



18. **डॉक्टर** - भाई ! क्या आप अपना चश्मा घर भूल आए हैं?

मरीज - हां, डॉक्टर साहब, मगर आप कैसे जान गए।

डॉक्टर - क्योंकि आप जानवरों के अस्पताल में खड़े हैं।

19. एक आदमी ने गलती से छोटे जूते खरीद लिए। उसे चलने में परेशानी हो रही थी। पैर में छाले भी पड़ गए थे। सामने खड़े **दूसरे आदमी ने उससे पूछा** - अरे, कहां से ले आये ये जूते ?

पहला आदमी *(चिढ़कर)* - पेड़ से ले आया।

दूसरा आदमी - अरे भाई तो इतनी जल्दी क्यों की? थोड़ा और बढ़ जाते तब तोड़ते?



20. एक आदमी होटल में गया। वहां लिखा था--ठण्डी कॉफी तीन रुपये, गरम कॉफी दो रुपये। गरम कॉफी मंगाकर वह जल्दी-जल्दी पीने लगा। **यह देखकर बैरा बोला** - जल्दी क्या है, धीरे-धीरे पियो।

आदमी ने कहा - अरे भाई, ठंडी हो गई तो एक रुपया फालतू देना पड़ेगा।

